

Seventeenth Loksabha

an>

Title: Need to take steps for the welfare of people in Laddakh Parliamentary Constituency.

श्री जामयांग शेरिंग नामग्याल (लद्दाख): अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे शून्य काल में बोलने के लिए मौका दिया, इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ ।

महोदय, हम सभी लोग 26 तारीख को कारगिल विजय दिवस की 20वीं एनिवर्सरी बड़े गर्व के साथ मना रहे थे । उसके दो दिन बीतने के बाद आज मैं अपनी कंस्टिटुएन्सी होकर आया हूँ । हम सभी को भारतीय सेना पर गर्व है, जिन्होंने यह विजय प्राप्त की थी । पूरे देशवासियों के साथ-साथ हमारे लद्दाखवासी भी उनको सलाम करते हैं ।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि जिस कारगिल युद्ध में भारतीय सेना ने विजेता प्राप्त किया था, उसमें हमारे सिविलियन का भी काफी कंट्रीब्यूशन था, इसलिए उनको भी रेकग्नाइज़ किया जाए । मैं आपकी अनुमति से इस विषय पर एक मिनट बोलना चाहूंगा । गारखोन गांव का रहने वाला ताशी नामग्याल वह शख्स है, जिन्होंने भारतीय सेना को इनफॉर्मेशन देकर देश के प्रति अपनी ड्यूटी निभाई थी । आज ताशी नामग्याल के गांव सहित आसपास के जो क्षेत्र युद्ध प्रभावित हैं, वहां किसी प्रकार का विकास कार्य नहीं होने के कारण गंभीर संकट से गुजर रहा है । महोदय, उसके बारे में मैं संक्षेप में बोलना चाहूंगा । वर्ष 1999 के वार में हमारे सिविलियन लोगों ने वालंटियर के रूप में सेना के साथ कंधे से कंधा मिलाकर वार में पार्टिसिपेट किया था । वही सिविलियन लोग आर्मी में पोर्टर के तौर पर रिक्रूट होते थे, लेकिन आज वह काम नहीं हो रहा है । उनके बारे में ऐसा कहा जाता है कि आपकी आयु 45 वर्ष से ऊपर है और आपका कद छोटा है । उस वक्त इन सारी चीजों को नहीं देखा गया था कि आपकी आयु कितनी है । उस वक्त हमें यह भी पता नहीं था कि हमारे वालंटियर वापिस जिंदा आएंगे या नहीं

आएंगे, लेकिन आज उनकी कैटेगरी देखी जा रही है, जो बड़े ही दुर्भाग्य की बात है। उस वक्त जो वार हो रहा था, हमारे ट्रांसपोर्टर के पास जो बस तथा ट्रक अवेलेबल होता था, उसको उन्होंने देश के प्रति समर्पित किया था। उनको यह पता नहीं था कि वह घड़ी वापस आएगी या नहीं आएगी, किराया भी मिलेगा या नहीं मिलेगा, लेकिन आज उनको कैटेगराइज़ किया जा रहा है। उनसे कहा जाता है कि आपका विन्टेज 15 साल से ज्यादा समय का हो गया है, इसलिए हम उसको नहीं लेंगे। हम बाहर से बड़े ट्रांसपोर्ट वाले का विन्टेज लाएंगे। जिनके पास 200-300 ट्रक होते हैं। हमारे ट्रांसपोर्टर का जो ट्रक होता है, वह केवल रोजी-रोटी कमाने का साधन होता है, लेकिन आज उनको एक्सेप्ट नहीं किया जा रहा है।

महोदय, इसके साथ ही मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि उस वक्त जो युद्ध हो रहा था, उसमें हमारी माताओं-बहनों ने भी कंट्रीब्यूट किया था। उनके घर में जो मैटेरियल अवेलेबल था, जैसे सत्तू के आटे से बनी हुई जो रोटी या ब्रेड थी, उसके माध्यम से भी हमारे वालंटियर्स ने कंट्रीब्यूट किया था। आज हमारे फार्मर्स सफर कर रहे हैं। उनको कहा जाता है कि आपके आलू का साइज छोटा है, प्याज का साइज छोटा है, गाजर का साइज छोटा है, आपकी फसलों का साइज ऑफ स्पेसिफिकेशन नहीं है।

माननीय अध्यक्ष: बहुत अच्छा विषय है। आप कोई अच्छा विषय जरूर बोलिए।

श्री जामयांग शेरिंग नामग्याल: अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात जरूर समाप्त करना चाहूंगा। आज उनके फसलों का साइज ऑफ स्पेसिफिकेशन ढूँढा जा रहा है। मैं आपके माध्यम से जानना चाहूंगा, क्योंकि वह क्षेत्र हाई अल्टीट्यूड तथा बर्फ़ीला है। हम उस एरिया में दिल्ली और मुंबई की तरह कहां से इतने बड़े-बड़े आलू का उत्पादन करेंगे? हाई अल्टीट्यूड में जो उत्पादन होता है, उसका न्यूट्रीशन वैल्यू भी होता है और वह ऑर्गेनिक भी होता है। इसके लिए मैं आपके माध्यम से माननीय गृह मंत्री जी से भी रिक्वेस्ट करना चाहूंगा, क्योंकि यह केवल उन ट्रांसपोर्टर्स, सिविलियन तथा फार्मर्स की इनकम के लिए ही नहीं,

बल्कि देश की सीमा सुरक्षा और बॉर्डर एरिया के निवासियों का भरोसा कायम करने के लिए बहुत जरूरी है, इसलिए इन सारी चीजों को कंसिडर किया जाए ।

अध्यक्ष महोदय, जिस ताशी नामग्याल का मैंने नाम लिया, उसने देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाया था । उस ताशी नामग्याल को भारत के राष्ट्रीय लेवल पर रेकग्नाइजेशन मिलना चाहिए, ताकि जो लोग बॉर्डर पर देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हैं, उनकी हौसला-अफजाई हो सके । साथ ही साथ मैं यह भी कहना चाहता हूं कि ताशी नामग्याल के गांव के साथ-साथ बॉर्डर एरिया के किसी भी गांव में अभी तक टेलीकम्यूनिकेशन की सुविधा नहीं पहुंची है । यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि उस युद्ध में जो स्कूल्स प्रभावित हुए थे, अभी तक उनका रेस्टोरेशन नहीं हुआ है । वहां के लोग आज भी ड्रिंकिंग वाटर के लिए तड़प रहे हैं । आज मैं अपने आप से यह सवाल पूछता हूं कि क्या वाकई हम विजय दिवस मना रहे हैं?

मैं अपने आप से सवाल पूछता हूं कि क्या हम वाकई विजय दिवस मना रहे हैं? यह सवाल मेरा अपने आपसे है । मैं न किसी के पक्ष में बोलूंगा और न ही विपक्ष में बोलूंगा । ग्राउंड रियलिटी को लेकर आज मैं इस सदन में निष्पक्ष भाव से बोल रहा हूं । हम उस एरिया के डेवलपमेंट को देखें तो क्या हम वाकई विजय दिवस मना रहे हैं? एक बार फिर से वंदे मातरम । हमारी भारतीय सेना को एक बार फिर से सेल्यूट करते हुए, मुझे मौका देने के लिए फिर से आपको धन्यवाद देता हूं । भव्िष्य में भी अगर देश को जरूरत पड़े, तो हमारे लद्दाखवासी तन, मन और धन बिना पूछे देश को समर्पित करने के लिए तैयार हैं ।

महोदय, एक महत्वपूर्ण विषय और है । हमारे यहां फार्मर्स की 4 से 8 कनाल की छोटी-मोटी खेती होती है । जब युद्ध हुआ, तब वहां सेना के टैंक लाए गए, गड्ढा खोदा गया, तो उस वक्त हमने कोई ऑब्जेक्शन नहीं किया, क्योंकि देश संकट में था, देश को उस समय जरूरत थी । वार खत्म होने के 20 साल बीतने के बाद आज भी हमारे फार्मर्स के खेत वापस नहीं किए गए हैं ।

मेरा भारत सरकार से विनम्रतापूर्वक निवेदन है कि हमारे यहां के फार्मर्स के खेत वापस किए जाएं और हमारे किसानों की इनकम को ध्यान दें ।

माननीय अध्यक्ष :

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल और

श्री भर्तृहरि महताब को श्री जामयांग शेरिंग नामग्याल द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है ।